17 नवम्बर 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अपनी आत्मा की पूर्ण शक्तियों को पहिचानकर उनके आश्रय से जगत के सामने दीन न होना ही स्वाभिमान है।

धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ-35

वर्ष : 32, अंक : 16 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

नवम्बर (द्वितीय), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. भारिल्ल को डी.लिट्

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : मंगलायतन विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह दिनांक 28 अक्टूबर,2009 को विशाल स्तर पर आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के चांसलर पद्मविभूषण गोपालदासजी नीरज ने की।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखी गई मौलिक पुस्तकों तथा देश-विदेश में नि:स्वार्थभाव से किये जा रहे प्रचार-प्रसार के कार्यों को मद्देनजर रखते हुये मङ्गलायतन विश्वविद्यालय ने अपने प्रथम सत्र के दीक्षान्त समारोह में हजारों छात्रों एवं देश की जानी-मानी अनेकों हस्तियों की मौजूदगी में उनको डी.लिट् की मानद् उपाधि देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.भूमित्रदेव ने डॉ. भारिल्ल का परिचय देकर प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया, चान्सलर डॉ. गोपालदास नीरज ने उन्हें प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया तथा उ.प्र. के राज्यपाल बी. एल. जोशी आदि विशिष्ट अतिथियों ने शॉल, श्री फल आदि से उनका सम्मान किया।

यह प्रथम अवसर है कि जैन समाज के किसी विद्वान को यह मानद उपाधि प्रदान की गई है। यह संपूर्ण जैन समाज के लिये गौरव की बात है।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बी. एल. जोशी ने कहा कि पिछली सदी टेक्नोलोजी की थी, जबकि वर्तमान सदी ज्ञान की है। ज्ञान और विवेक ही दुनिया की आर्थिक शक्तियाँ हैं।

कुलपति प्रो. भूमित्रदेव ने डॉ. भारिल्ल का परिचय देते हुये कहा कि ''डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल श्रमण संस्कृति के मूर्धन्य विद्वान हैं। आप शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए. एवं पीएच.डी. हैं। आपने अभी तक शताधिक पुस्तकों का प्रणयन किया है, जिसका विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है तथा जिनकी 40 लाख से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित की जा चुकी हैं।

आपने नैतिक शिक्षा एवं चरित्र निर्माण के क्षेत्र में पाठ्यक्रम निर्माण, अध्यापकों हेतु 40 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, 450 पाठशालाओं का संचालन तथा 6 लाख से अधिक छात्रों को शिक्षण प्रदान किया है। आप श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के निदेशक हैं। युवाओं को संस्कार-शिक्षा से जोड़ने हेतु आपके निर्देशन में 350 से अधिक शाखाओं का गठन किया जा चुका है।

आप लोकप्रिय आध्यात्मिक प्रवचनकार हैं, देश-विदेश में अहिंसा, शाकाहार आदि विषयों पर आपके प्रवचनों को सुनने के लिये जनसामान्य लालायित रहता है। शताधिक नागरिक अभिनंदन-पत्रों एवं अभिनंदन-ग्रन्थ से सम्मानित किया जा चुका है।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय आपको '**डी.लिट्.**' उपाधि प्रदान करते हुये आपके मंगल भविष्य की मंगल कामना करता है।''

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एम. एन. वैंकटचल्लैया को डॉक्टरेट ऑफ लॉ की तथा दक्षिण अफ्रीका के उद्योगपति श्री अजय गुप्ता और युवा उद्योगपति व सांसद नवीन जिंदल को भी डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

इसी प्रसंग पर विश्वविद्यालय के प्रथम सत्र में एम.बी.ए किये हुये 510 छात्रों में से प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त को सभा में एम.बी.ए. की डिग्री प्रदान की गई।

डी.लिट् की मानद उपाधि मिलने पर

डॉ. भारिल्ल द्वारा दिया गया उद्बोधन

डॉ. भारिल्ल को प्रशस्ति देते हुये कुलाधिपति पद्मविभूषण गोपालदासजी नीरज

उपाधि प्राप्त करने के बाद डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन ह्न

संतप्त मानस शांत हों, जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह में सम्मिलित होकर मैं हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। मङ्गलायतन शब्द स्वयं में महान है और अपने अन्तर में गंभीर भाव को समाये हुए है।

मंगं लातीति मंगलम् ह्न इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो आनन्द को लावे, वह मंगल है। मंगल शब्द का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि **मलं गालयतीति मंगलम्** जो पाप मल को गलावे, वह है मंगल।

इसतरह सब कुछ मिलाकर **मंगल** शब्द का अर्थ हुआ कि जो पापों को गलाकर आनन्द को लावे, वह मंगल है। आयतन का अर्थ होता है घर-मंदिर। इसप्रकार यह मङ्गलायतन मंगल का आयतन है। विश्वविद्यालय तो ज्ञान का मंदिर ही होता है। इसतरह यह मङ्गलायतन विश्वविद्यालय पापों को गलाने वाले और आनन्द को लानेवाले ज्ञान का मंदिर है।

यथा नाम तथा गुण इस मङ्गलायतन विश्वविद्यालय ने अल्प काल में ही अपने सद्कार्यों से जो सुयश अर्जित किया है, वह अपने आप में एक उत्कृष्ट उपलब्धि है।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय का यह प्रथम दीक्षान्त समारोह है। दीक्षान्त समारोह का एक सुन्दरतम स्वरूप हमें **बाणभट्ट** की **कादम्बरी** में देखने को मिलता है। **कादम्बरी** भारतीय वाङ्मय का एक ऐसा प्राचीनतम गद्य काव्य है; जिसके बारे में कहा जाता रहा है कि **कादम्बरी रसज्ञानां आहारोऽपि न रोचते** ह्न कादम्बरी पर रींझनेवालों को भोजन भी रुचिकर नहीं लगता।

सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायं मा प्रमदह्न ये वाक्य उसी महान ग्रन्थ के हैं, जो दीक्षान्त समारोह में दिये जानेवाले दीक्षान्त भाषण के आरंभिक अंश हैं।

इस महान संस्थान के प्रथम दीक्षान्त समारोह में डी.लिट् की मानद उपाधि से अलंकृत होकर मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। भारतीय संविधान के विशेषज्ञ महान न्यायाधिपति **व्यंकट चैलैया,** युवा उद्योगपति **नवीन जिन्दल** एवं **अजय गुप्ता (साउथ अफ्रीका)** के साथ इस सम्मान से सम्मानित होकर मेरा आनन्द द्विगुणित हो गया है।

मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि साहित्यकारों और समाजसेवकों का सम्मान एक व्यक्ति का नहीं; व्यक्तिविशेष का नहीं; अपितु सत्साहित्य और समाजसेवा का सम्मान है। इसप्रकार के प्रयासों से सत्साहित्य के निर्माण और सच्ची समाजसेवा को प्रोत्साहन मिलता है।

मैं तो उस कच्ची नहर के समान हूँ, जो जलाशय से प्राप्त जल से पहले तो अपनी प्यास बुझाती है, जब तृप्त हो जाती है तो उस जलप्रवाह को दूसरों की प्यास बुझाने के लिए आगे बढा देती है।

मैंने भी **पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी** से प्राप्त **भगवान महावीर** की वाणी से सबसे पहले अपनी प्यास बुझाई है, उसका भरपूर आनन्द लिया है; उसके बाद जन-जन की प्यास बुझाने के लिए व्यवस्थितरूप से आगे बढाने के प्रयास में स्वयं को समर्पित कर दिया है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रमुख शिष्यों में एक नाम पण्डित कैलाशचन्दजी बुलन्दशहर वालों का भी आता है। अध्यात्म के रंग में रंगे हुए पण्डित कैलाशचन्दजी जीवन भर सारे देश में घूम-घूमकर अध्यात्म का प्रचार करते रहे हैं।

उनसे मेरा परिचय लगभग 50 वर्ष पुराना है। उनकी भावना थी कि एक ऐसा शिक्षण संस्थान बने, जहाँ लौकिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षा का भी प्रबंध हो। मङ्गलायतन विश्वविद्यालय की स्थापना के रूप में उनका स्वप्न साकार हुआ है।

मैं इस बात को बहुत गहराई से अनुभव करता हूँ कि मेरा यह सम्मान उस वीतरागी तत्त्वज्ञान का सम्मान है, जो मुझे पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी से प्राप्त हुआ है और जिसे मैंने अनेकानेक ग्रंथों के निर्माण के माध्यम से, सत्साहित्य की सेवा के माध्यम से, अपने प्रवचनों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है और भारतीय संस्कृति के संस्कारों से ओतप्रोत पाँच सौ से अधिक विद्वान् तैयार किये हैं, जो आज विश्व के कोने-कोने में भारतीय संस्कृति, अहिंसा और शाकाहार का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

यह सम्मान मेरा नहीं, गुरुवर श्री कानजी स्वामी का है और उसके बाद उन सब सहयोगियों का है, जो इस महान कार्य में मेरे कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग कर रहे हैं। जयजिनेन्द्र। ●

सम्पादकीय – 40

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

निश्चय–व्यवहार की अपेक्षा मुनिराज के भेद ह्न

'जिसे शत्रु और बन्धुवर्ग समान हैं, सुख–दुःख समान है, प्रशंसा और निन्दा के प्रति समता है, जिसे लोष्ठ (ढेला) और सुवर्ण समान है तथा जीवन–मरण के प्रति समता है, वह (निश्चय) श्रमण है।'

'साधु काय व वचन के व्यापार से मुक्त, चतुर्विध आराधना में सदा रत, निर्ग्रन्थ और निर्मोही होते हैं।'

'जो निष्परिग्रही व निरारम्भ है, आहार में शुद्धभाव रखता है, एकाकी ध्यान में लीन होता है, सब गुणों से परिपूर्ण है वह श्रमण है।'

'जो अनन्त ज्ञानादिस्वरूप शुद्धात्मा की साधना करते हैं, उन्हें साधु कहते हैं।'

'जो साधु बोलता नहीं है। हाथ–पाँव आदि के इशारे से कुछ नहीं दर्शाता, मन से भी कुछ चिन्तवन नहीं करता। केवल शुद्धात्मा में लीन रहता हुआ अन्तरंग व बाह्य वाग्व्यापार से रहित निस्तरंग समुद्र की तरह शान्त रहता है। जब वह मोक्षमार्ग के विषय में ही उपदेश नहीं करता है, तब वह लौकिक मार्ग के उपदेशादि कैसे कर सकता है?

ऐसे वैराग्य की पराकाष्ठा को प्राप्त होकर अधिक प्रभावशाली हो जाता है। अन्तरंग–बहिरंग मोह की ग्रन्थि को खोलनेवाला यमी होता है। परीषहों व उपसर्गों के द्वारा वह पराजित नहीं होता और कामरूप शत्रु को जीतनेवाला होता है। इत्यादि अनेक प्रकार के गुणों से युक्त साधु ही मोक्ष की प्राप्ति के लिए तत्त्वज्ञानियों के द्वारा नमस्कार किये जाने योग्य है।'

जैनदर्शन में जहाँ 'चारित्तं खलु धम्मो' कहकर शुद्ध वीतरागभावरूप चारित्र को धर्म कहा गया है, वहीं सम्यग्दर्शन को 'दंसण मूलो धम्मो' कहकर धर्म का मूल कहा गया है। सम्यग्दर्शन की प्रधानता मात्र मुनिधर्म के लिए नहीं, अपितु धर्म के प्रारम्भ के लिए भी है।

तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन के बिना तो धर्म का प्रारम्भ ही नहीं होता, तब उसकी वृद्धि और पूर्णता की तो सम्भावना ही नहीं है।

श्रमणाभासों के आगम प्रमाण ह्न

'जो श्रमणावस्था में भेदसहित नव पदार्थों का यथार्थ श्रद्धा नहीं करता, वह श्रमण नहीं है, उन्हें धर्म का उद्भव नहीं होता। सूत्र, संयम और तप से संयुक्त होने पर भी यदि जिनोक्त आत्मप्रधान पदार्थों का श्रद्धान नहीं करता तो वह श्रमण नहीं है ह्न ऐसा कहा है। भले ही वे द्रव्यलिंगी के रूप में जिनमत में हों, तथापि वे 'वस्तुस्वरूप को अयथार्थतया ग्रहण करते हैं वे आगामी काल में संसार में परिभ्रमण करेंगे।'

'बिना सम्यग्दर्शन के ५ महाव्रत आदि २८ मूलगुण, तथा २२ परीषहों का जीतना, १३ प्रकार का चारित्र, १२ प्रकार का तप, षटावश्यक, ध्यान व अध्ययन ह्न ये सब उत्तरगुण संसार के बीज हैं।'

'बाह्य परिग्रह से रहित होने पर भी मिथ्याभाव के कारण वह परिग्रह–रहित नहीं है, उसके कायोत्सर्ग और मौन से क्या साध्य है।'

'आत्मा को परद्रव्यों का कर्ता माननेवाले भले ही लोकोत्तर हों, श्रमण हों; पर वे लौकिकपने का उल्लंघन नहीं करते। सम्यग्दर्शनयुक्त नग्नरूप को ही निर्ग्रन्थ संज्ञा प्राप्त है।'

वीतरागभावरूप परिणत मुनिराज की भूमिका में प्रवर्तमान व्रतादिकरूप परिणति वाले निश्चय साधु एवं शरीर की नग्न दिगम्बर दशा आदि पराश्रित भावयुक्त व्यवहार साधु नाम से कहे जाते हैं।

व्यवहार साधु के स्वरूपदर्शक आगम प्रमाण ह्न

'जो पाँच महाव्रतों आदि २८ मूलगुणों को धारण करते हैं और शक्ति अनुसार उत्तरगुणों का पालन करते हैं, वे साधु परमेष्ठी होते हैं।'

'जो सातों तत्त्वों का भेदरूप से श्रद्धान करता है, भेदरूप से उसे जानता है तथा विकल्पात्मक भेद रत्नत्रय की साधना करता है; वह मुनि व्यवहारावलम्बी है।'

यद्यपि मुनिराज का मुख्य कर्त्तव्य तो निजस्वरूप में विश्रान्त रहना ही है, परन्तु जब उपयोग वहाँ स्थिर नहीं रह पाये, तब मुनि की दशा में सहज ही होनेवाले अन्य कर्त्तव्य इसप्रकार होते हैं ह्न 'मन–वचन–काय की शुद्धिपूर्वक निम्नांकित १३ क्रियाओं की भावना करना। जैसे – पंच नमस्कार, षड् आवश्यक, चैत्यालय में प्रवेश करते समय तीन बार 'नि:सही' शब्द का उच्चारण और चैत्यालय से बाहर निकलते समय तीन बार 'असही' शब्द का उच्चारण। अथवा पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति ह्न यह तेरह प्रकार का चारित्र ही तेरह क्रियाएँ हैं।'

'जो मुनि आहार, उपकरण एवं आवास को शोधकर सेवन नहीं करता है; वह मुनि गृहस्थपने को प्राप्त होता है और लोक में मुनिपने से हीन कहलाता है। जो साधु मैत्री भावरहित है, वह मोक्ष का चाहनेवाला होने पर भी मोक्ष को नहीं पा सकता।'

'जो साधु का लिंग धारण कर गाना गाता है, बाजा बजाता है, तीव्र मान से गर्वित होकर निरन्तर वाद–विवाद करता है तथा भोजन में रसगृद्धि करता है। मायाचारी करता है। आहार के लिए दौड़ता है, उसके निमित्त से कलह करता है, ईर्यापथ शोधे बिना दौड़ते हुए अथवा उछलते हुए चलता है। महिला वर्ग में राग करता है और दूसरों में दोष निकालता है। गृहस्थों व शिष्यों में अति स्नेह रखता है, स्त्रियों पर विश्वास करके उनको दर्शन–ज्ञान–चारित्र प्रदान करता है, उनको सम्यक्त्व बताता है, इत्यादि अनेक प्रकार के दूषण को लगाता है, वह नरक का पात्र है, भावों से विनष्ट हुआ वह पार्श्वस्थ से भी निकृष्ट है, साधु नहीं है।'

'जो मोह से अथवा प्रमाद से जितने काल तक लौकिक क्रिया करता रहता है, वह उतने काल तक आचार्य नहीं है और अन्तरंग में व्रतों से च्युत भी है।'

'शुभोपयोग की क्रियाओं में अधिक वर्तन करना साधु को योग्य नहीं, क्योंकि वैयावृत्त्यादि शुभ कार्य गृहस्थों को प्रधान है और साधुओं को गौण। मंत्र, तंत्र, ज्योतिष, वैद्यक, वशीकरण, उच्चाटन आदि करना; मंत्र सिद्धि, शस्त्र, अंजन सर्प आदि की सिद्धि करना तथा आजीविका करना साधु के लिए वर्जित है। लौकिकजन, तरुणजन, स्त्री, पशु आदि की संगति करना निषिद्ध है। आर्यिका से भी सात हाथ दूर रहना योग्य है। पार्श्वस्थादि भ्रष्ट मुनियों की संगति वर्जनीय है। मात्रा से अधिक पौष्टिक व गृद्धतापूर्वक, गृहस्थ पर भार डालकर भोजन करना वर्जनीय है।

'स्वच्छन्द व एकल विहार करना इस काल में वर्जित है।'

'निश्चय मुनि और व्यवहार मुनि ऐसे मुनि दो अलग–अलग व्यक्ति नहीं है। एक ही मुनि में वीतरागता और सरागता की अपेक्षा निश्चय मुनि और व्यवहार मुनि ऐसे दो भेद होते हैं। इन्हीं द्विरूप परिणतियों की अपेक्षा से ही मुनिराज के सराग–वीतराग भेद जिनागम में उपलब्ध हैं। **(क्रमश:)**

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1. **दिल्ली :** यहाँ श्री दि.जैन चैत्यालय विश्वासनगर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर सोमवार दिनांक 26 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक श्री पंचमेरू नंदीश्वर महामण्डल विधान कराया गया।

इस पावन प्रसंग पर आध्यात्मिक प्रवचनकार श्री प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर एवं अनेक स्थानीय विद्वानों द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान की गंगा बहाई गई। विधान की संपूर्ण कार्यवाही पण्डित प्रियंकजी शास्त्री एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सम्पन्न करायी गयी। दिनांक 2 नवम्बर को प्रात: 8 बजे एक भव्य रथयात्रा का भी आयोजन किया गया।

2. **अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री दि.जैन सीमंधर जिनालय में श्री वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित धूम–धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर आध्यात्मिक विद्वान पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार की छठवीं गाथा पर प्रवचन तथा रात्रि में प्रवचनसार ग्रन्थ के आधार से मुनिराज का स्वरूप स्पष्ट किया गया। साथ ही पण्डित अश्विनजी जैनदर्शनाचार्य बांसवाड़ा द्वारा प्रतिदिन प्रात: श्रीजी के प्रक्षालपूर्वक नित्यमह पूजनों के अन्तर्गत समुच्चय पूजन, देव–शास्त्र–गुरू पूजन, नवदेव पूजन, सीमन्धर पूजन, अनंत तीर्थङ्कर पूजन, आदिनाथ पूजन, पंचमेरु–नन्दीश्वर पूजन तथा कविवर पण्डित राजमलजी पवैया द्वारा रचित श्री त्रिकालवर्ती सिद्धचक्र विधान मंडल संगीतमय वाद्ययंत्रों द्वारा संपन्न कराया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत ज्ञानवर्धक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें देव–शास्त्र–गुरु का स्वरूप, निमित्त–उपादान, बारह भावना, क्रमबद्धपर्याय, षट्लेश्या, सुख क्या है ?, पंचपरमेष्ठी आदि मार्मिक विषयों की चर्चा की गई। दोपहर में समयसार पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन सुबह–शाम 100 से अधिक मुमुक्षु साधर्मियों ने धर्म लाभ लिया।

कार्यक्रम श्री पूनमचन्दजी लुहाडिया के मार्गदर्शन में श्री मनोजजी कासलीवाल, श्री प्रकाशजी पाण्ड्या आदि ने सम्पन्न कराये।

3. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री दि. जैन मंदिर मुशरफान जौहरी बाजार में महापर्व के अवसर पर श्री माणकचन्दजी मुशरफ परिवार की ओर से श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा सम्पन्न कराये गये। कार्यक्रम में श्री विजयकुमारजी सौगाणी, श्रीमती शीलाजी सौगाणी, श्रीमती सोहनी देवी एवं श्री कमलचन्दजी मुशरफ का विशेष सहयोग मिला।

सायंकाल श्रीमती प्रभाजी जैन द्वारा विधान की जयमाला पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 3 नवम्बर को शांतिविधान का आयोजन किया गया।

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव सम्पन्न

1. **नागपुर (महा.) :** यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में श्री महावीर दि.जैन मंदिर नेहरू पुतला में सामूहिक पूजन के उपरान्त पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, जयपुर के प्रासंगिक प्रवचन का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री का मार्मिक उद्बोधन हुआ।

ज्ञातव्य है कि यहाँ श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ के माध्यम से चलाये जा रहे विशारद पाठ्यक्रम के लिये लोगों में भारी उत्साह है; क्योंकि इसमें क्रमबद्ध अध्ययन करने का अवसर मिलता है। इसी उत्साह को देखते हुये स्थानीय विद्वान पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री ने विशारद पाठ्यक्रम संबंधित कक्षायें प्रारंभ की।

2. **खनियांधाना–शिवपुरी (म.प्र.) :** यहाँ दिनांक 16 अक्टूबर को धन्यतेरस के अवसर पर रात्रि में भगवान महावीर, धन्यतेरस क्या है, क्यों व कैसे मनानी चाहिये आदि विभिन्न विषयों पर एक सुन्दर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके वक्ता टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान एवं भूतपूर्व विद्यार्थी रहे। गोष्ठी का संचालन पण्डित आकाश शास्त्री ने किया।

जैन युवा फैडरेशन शाखा–खनियांधाना द्वारा दीपावली के एक दिन पूर्व दिनांक 17 अक्टूबर को पटाखे न फोड़ने के संदर्भ में एक भव्य झांकी का सामाजिक तौर पर प्रदर्शन किया गया। झांकी में 'अहिंसा : महावीर की दृष्टि में' आदि पुस्तकों की स्टॉल भी लगाई गई।

3. **अकाझरी–शिवपुरी (म.प्र.) :** यहाँ प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान महावीरस्वामी का निर्वाणोत्सव बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात:काल भगवान महावीर की पूजन एवं सायंकाल पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर के मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ पर मार्मिक प्रवचन हुये। तदुपरांत पण्डित नितेन्द्रकुमारजी शास्त्री इन्दौर एवं आकाश जैन खनियांधाना ने अक्षय निधि प्रतियोगिता का आयोजन किया।

– अशोक कुमार जैन (सचिव)

4. **उदयपुर (राज.) :** अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उदयपुर जिले के द्वारा मुखर्जी चौक स्थित चन्द्रप्रभ दि. जिनचैत्यालय में दिनांक 25 अक्टूबर को पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत पटाखे नहीं फोड़नेवाले 165 बच्चों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुमारसाहब लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने कहा कि जो काम बड़ों को करना चाहिये वह बच्चों ने कर दिखाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महीपाल जैन ज्ञायक, बांसवाड़ा ने की। विशिष्ट अतिथि श्री ताराचन्द जैन , श्री कन्हैयालाल दलावत, श्री जिनेन्द्र शास्त्री, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. महावीरप्रसाद जैन, श्री हीरालाल अखावत एवं श्री कचरूलाल मेहता थे।

अतिथियों का स्वागत भाषण फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने किया। कार्यक्रम का संचालन फैडरेशन के जिला प्रभारी पण्डित खेमचन्द जैन ने एवं आभार प्रदर्शन सुरेश भोरावत ने किया।

– राजकुमार के. भोरावत

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

एक साथ 25 स्थानों पर विशाल धार्मिक ग्रुप शिविर

भगवान महावीरस्वामी के निर्वाणोत्सव के अवसर पर दिनांक 19 से 25 अक्टूबर तक मध्यप्रदेश के दमोह, सागर एवं छतरपुर जिलों के छोटे-बड़े 25 स्थानों पर जैनत्व जागरण संस्कार शिविर लगाये गये। शिविरों का आयोजन कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के आयोजकत्व में जैन युवा शास्त्री परिषद् बकस्वाहा द्वारा किया गया।

इस शिविर का मूल उद्देश्य नवयुवा पीढी में जैनत्व के संस्कारों का बीजारोपण एवं जैनत्व का गौरव जागृत करना रहा है।

इस शिविर का भव्य सामूहिक उद्घाटन समारोह बकस्वाहा मुमुक्षु मण्डल द्वारा बकस्वाहा में किया गया, जिसमें पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित माधवजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित प्रमोदजी शाहगढ, पण्डित मनीषजी सिद्धांत खड़ैरी, पण्डित भानुजी खड़ैरी, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित सुनीलजी शाहगढ एवं पण्डित नितिनजी खड़ैरी आदि विद्वान मंचासीन थे।

इस जैनत्व जागरण अभियान को सफल बनाने में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित कमलेशजी बण्डा, पण्डित संभवजी नैनधरा, पण्डित अंकुरजी दहेगांव, पण्डित अभिषेकजी मड़देवरा, पण्डित आशीषजी भगवां, पण्डित विवेकजी मड़देवरा, पण्डित एकत्वजी खनियांधाना, पण्डित आशीषजी मड़ावरा, पण्डित विकासजी इन्दौर, पण्डित सौरभजी अमरमऊ, पण्डित विक्रांतजी भगवां, पण्डित अनेकांतजी दलपतपुर, पण्डित सुदीपजी अमरमऊ, पण्डित रविन्द्रजी बकस्वाहा, पण्डित विश्वासजी बड़ामलहरा, पण्डित पंकजजी बकस्वाहा, पण्डित अशोकजी बकस्वाहा, पण्डित सनतजी बकस्वाहा, पण्डित अंकितजी खड़ैरी एवं पण्डित अभयजी बकस्वाहा आदि टोडरमल महाविद्यालय के विद्वानों का सहयोग रहा।

इस शिविर का निरीक्षण पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर ने किया।

संपूर्ण शिविर में लगभग 1900 शिविरार्थियों ने लाभ लिया, जिनमें 1200 बच्चे शामिल हैं।

इस शिविर की विशेष उपलब्धि यह रही कि इसमें 200 से अधिक जैनेतर बच्चों एवं बड़ों ने भाग लिया। गांव-गांव में अनेक नवीन पाठशालायें प्रारंभ की गयीं।

शिविर का सामूहिक समापन समारोह सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी-सिद्धायतन में हुआ, जहाँ सभी विद्वानों, प्रभारियों के साथ नियमित पाठशाला पढाने के लिये संकल्प लेने वाले अध्यापकों का भी सम्मान किया गया।

स्थानीय रूप से बकस्वाहा में पण्डित गुलाबचन्दजी बीना द्वारा समयसार, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर द्वारा पंचलब्धि एवं पंचपरावर्तन की विशेष कक्षायें तथा पण्डित अंकुरजी शास्त्री दहेगांव द्वारा **हम उपयोग का प्रयोग कैसे करें** इस विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला, इसके साथ ही पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा सुबह विशेष पूजन, भक्ति एवं तीनों समय बालकक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर का सफल संचालन पण्डित चैतन्यजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा एवं वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

- मुमुक्षु मण्डल (बकस्वाहा)

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना

1. **छिंदवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ मुमुक्षु मण्डल में ब्र.यशपालजी जैन द्वारा दिनांक 12 से 20 अक्टूबर तक प्रात: कर्म के दस करण पर एवं रात्रि में पुरुषार्थसिद्धयुपाय पर प्रवचन हुये। लोगों को यह विषय सुना हुआ होने पर भी विस्तार से सुनने के कारण प्रिय लगा; गुणस्थान के संबंध में सुनने की जिज्ञासा भी व्यक्त की है। समय की अनुकूलता को देखकर ब्र.यशपालजी जिज्ञासा अवश्य शांत करेंगे। **- अशोक जैन**

2. **भोपाल-कोहेफिजा (म.प्र.) :** यहाँ ब्र.यशपालजी जैन द्वारा दिनांक 21 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक प्रात: कर्म के दस करण पर प्रवचन तथा रात्रि में गुणस्थान की कक्षा ली गई। यहाँ के समाज को करण दशक एवं गुणस्थान का ज्ञान नहीं होने से विशेष जिज्ञासा व उत्साह था। विशेष बात यह थी कि अष्टान्हिका पर्व होने पर भी लोगों की संख्या अधिक थी। यहाँ प्रथम से चौथे गुणस्थान तक का विषय चला। **- जयकुमारजी बज**

शिविर सम्पन्न

होशंगाबाद : यहाँ दिनांक 9 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक पण्डित दिनेशभाई शहा एवं डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा प्रतिदिन 6 घंटे **सिद्धांत प्रवेशिका** तथा **करणानुयोग** पर प्रवचन हुये। दीपावली का अवसर होने पर भी बड़ी संख्या में समाज उपस्थित रहती थी; अनेक नये लोग भी स्वाध्याय में जुड़े। समाज की ओर से आप दोनों को पुन: आमंत्रित किया गया, जिसे आपने सहर्ष स्वीकार किया। इनकी प्रेरणा से यहाँ बालकों के लिये पाठशाला प्रारंभ की गई। प्रत्येक रविवार को चलने वाली इस पाठशाला में अनेक महिलाओं ने उपस्थित रहने का संकल्प किया है। **- अखिलेश जैन**

वेदी प्रतिष्ठा समारोह संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री महावीर दि. जैन चेरिटेबल ट्रस्ट हिरणमगरी सेक्टर-11 के श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर में दिनांक 15 अक्टूबर को विधानाचार्य पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा ने पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री के सहयोग से शुभ मुहुर्त में लघु मानस्तम्भ में प्रतिष्ठित जिन बिम्बों को हर्षोल्लास के साथ विराजमान किया। सारा वातावरण भगवान महावीर तथा शांतिनाथ के जयकारों से गुंजायमान हो गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ताराचन्दजी जैन ने विधानाचार्य तथा उनके सहयोगियों एवं उपस्थित समुदाय का आभार व्यक्त किया।

नवीन प्रकाशन

1. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित नियमसार अनुशीलन भाग-1 (पृष्ठ-340, मूल्य-25 रुपये) छपकर तैयार है। इस पुस्तक में नियमसार ग्रन्थ की गाथा 1 से 76 तक का अनुशीलन किया गया है। पुस्तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर से प्राप्त की जा सकती है।

2. पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित एवं डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा हिन्दी में अनुवादित **सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका कर्मकाण्ड अर्थसंदृष्टि** सहित (दो भाग, कुल पृष्ठ-1050, मूल्य पोस्टेज सहित 175/- रु.) छपकर तैयार है। ग्रंथ प्राप्ति हेतु निम्न पते पर संपर्क करें-

पण्डित दिनेशभाई शहा, 157/9 निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई-400022, फोन नं.- 24073581

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 40

नौवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जब बेटा व्यापार करने मुम्बई गया था, तब हमने उसे पूंजी के लिए पाँच लाख रुपये दिये थे। यदि वह पाँच वर्ष में पाँच के पच्चीस करके लावे, तब तो कहना ही क्या है; किन्तु यदि वह पाँच लाख ही वापिस लेकर आ जावे तो हम कहते हैं कि कोई बात नहीं, लाभ नहीं कमाया तो नुकसान भी तो नहीं किया, पूंजी तो सुरक्षित रखी और पाँच वर्ष का खर्च भी तो चलाया; पर हम यह भूल जाते हैं कि इस बीच उसने भरी जवानी के पाँच वर्ष गमा दिये हैं, उसकी किसी को कोई कीमत ही नहीं है।

यदि रुपये गमाता है तो हम मानते कि कुछ गमाया है; पर जिस मनुष्य भव के एक समय का मूल्य अनंत चक्रवर्तियों की सम्पदा से भी अधिक मूल्यवान है; उस मनुष्य भव के अमूल्य पाँच वर्ष यों ही गमा दिये तो भी ऐसा नहीं लगता कि कुछ गमाया है।

देखो तो इस जीव की नादानी कि करोड़ों की एक-एक घड़ी चली जा रही है और यह विषय-कषाय में उलझ कर रह गया है।

यह मनुष्य भव इतना मूल्यवान है कि यदि हम इसका उपयोग आत्मानुभव करने में करें, अपने ज्ञान-दर्शन उपयोग को क्षण भर के लिए अपने में लगा देवें तो सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो जावे और लगातार अन्तर्मुहूर्त तक आत्मा में ही लगाये रखें तो केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाये। ह्न ऐसे इस मनुष्य भव के पाँच वर्ष यों ही गमा दिये।

पण्डितजी कहते हैं कि सबसे बड़ा बिगाड़ तो यही है कि जिस मनुष्य भव में आत्मकल्याण किया जा सकता था; उसे यों ही गृहीत मिथ्यात्व के सेवन और विषय-कषायों के भोगने में लगा दिया। यह कोई समझदारी का काम नहीं है।

इसप्रकार यहाँ कुदेवों की चर्चा समाप्त होती है। ●

दसवाँ प्रवचन

मोक्षमार्गप्रकाशक का **छठा अधिकार** चल रहा है। इस अधिकार में कुदेव, कुगुरु और कुधर्म की चर्चा की गयी है। अब तक अपन कुदेव के बारे में चर्चा कर चुके हैं और अब कुगुरुओं के संबंध में चर्चा करना है।

यद्यपि उक्त चर्चा आज के जमाने में खतरे से खाली नहीं है; तथापि उससे बचना भी तो संभव नहीं है; क्योंकि कुदेव, कुगुरु और कुधर्म का स्वरूप समझे बिना गृहीत मिथ्यात्व नहीं छूटता और सच्चे देव, गुरु और धर्म का स्वरूप समझे बिना सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं होती।

यदि हमें मुक्तिमहल की पहली सीढी सम्यग्दर्शन पर कदम रखना है, सम्यग्दर्शन प्राप्त करना है तो हमें कुदेव, कुगुरु और कुधर्म तथा सच्चे देव, गुरु व धर्म का स्वरूप समझना ही होगा। यदि यह बात नहीं होती तो न तो पंडितजी इनकी चर्चा करते और न हम ही इस प्रसंग में कुछ कहते; किन्तु इनका सही स्वरूप समझे बिना कल्याण का मार्ग खुलता नहीं है; अत: इनका प्रतिपादन अत्यन्त आवश्यक है।

यद्यपि हम चर्चा आरंभ कर रहे हैं; तथापि किसी के चित्त में विक्षोभ पैदा न हो ह्न इस बात का ध्यान रखेंगे। यह बात भी सत्य है कि हम चाहे जितनी सावधानी रखें; तो भी जो वस्तुस्थिति है; उसे तो स्पष्ट करना ही होगा। उसके बिना तो उनका स्वरूप ही स्पष्ट नहीं होगा।

कुगुरु का स्वरूप स्पष्ट करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं कि जो जीव विषय-कषायादि अधर्मरूप परिणमित होते हैं, मानादिक कषायों के कारण स्वयं को धर्मात्मा मानते हैं, धर्मात्माओं के योग्य नमस्कारादि क्रियायें कराते हैं तथा किसी एक अंग को किंचित् धारण करके बड़ा धर्मात्मा कहलाते हैं, बड़े धर्मात्माओं के योग्य क्रियायें कराते हैं ह्न इसप्रकार धर्म के आधार पर अपने को बड़ा मनवाते हैं; उन सभी को कुगुरु जानना चाहिए; क्योंकि धर्मपद्धति में तो मिथ्यात्व और विषय-कषायादि के छूटने पर सम्यग्दर्शन सहित जिस भूमिका के योग्य आचरण धारण करे, पद भी तदनुसार ही होता है।

कुगुरु के उक्त स्वरूप के संदर्भ में उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें किसी व्यक्ति या धर्म या दर्शन का उल्लेख न करके वृत्ति और प्रवृत्तियों के माध्यम से कुगुरुओं का स्वरूप स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बल इस बात पर है कि गुरुता न होने पर भी लोग स्वयं को गुरु के रूप में स्थापित करना चाहते हैं, धर्मगुरुओं को सहजभाव से प्राप्त होनेवाले सम्मान को प्राप्त करना चाहते हैं; एतदर्थ अनेक प्रकार के आडम्बर करते हैं, वेषादि धारण करते हैं।

ये बातें ऐसी हैं कि जो किसी शास्त्र में देखकर नहीं लिखीं जा सकती; जगत में उस समय जिसप्रकार की प्रवृत्तियाँ चल रही थीं; उनका बारीकी से निरीक्षण करके ही पण्डितजी ने इस विषय को प्रस्तुत किया है।

वे लिखते हैं कि कुछ लोग कुल की अपेक्षा अपना गुरुपना स्थापित करते हैं। वे कहते हैं कि हमारा कुल ऊँचा है, इसलिए हम सबके गुरु हैं।

इस पर पण्डितजी यह कहना चाहते हैं कि यदि कोई उच्च कुलवाला हीन आचरण करे तो उसे गुरु कैसे माना जा सकता है ? किसी कुल में पैदा होने मात्र से क्या होता है, उच्चता और नीचता का निर्णय तो आचरण से होना चाहिए, न कि कुल से। **गुरुपना तो एकदम व्यक्तिगत है, किसी कुल या परिवार को गुरु कैसे माना जा सकता है ?**

कुछ लोग कहते हैं कि हमारे पूर्वजों में बड़े-बड़े धर्मात्मा हो गये हैं, सन्त हो गये हैं; विद्वान हो गये हैं, त्यागी-तपस्वी हो गये हैं, दानवीर हो गये हैं; इसलिए हम भी महान हैं; उनसे पण्डितजी कहते हैं कि पूर्वजों की

महानता से तुम महान कैसे हो सकते हो ?

यदि तुम्हें महान बनना है तो तुम्हें स्वयं महान कार्य करने होंगे। पूर्वजों की महानता उनके साथ गई, वह तुम्हारे किसी काम आनेवाली नहीं है।

जिसप्रकार डॉक्टर के बेटे को डॉक्टर, वकील के बेटे को वकील, विद्वान के बेटे को विद्वान नहीं माना जा सकता; उसीप्रकार तुम्हें भी पूर्वजों के कारण महान नहीं माना जा सकता।

दिगम्बर जैनदर्शन में तो यह बात किसी भी स्थिति में संभव नहीं है; क्योंकि दिगम्बर जैनों में देव–शास्त्र–गुरुवाले गुरु तो नग्न दिगम्बर पूर्ण ब्रह्मचारी ही होते हैं; अत: उनके कोई संतान होना ही संभव नहीं है।

यद्यपि आज कुल से गुरु मानने की बात समाप्तप्राय: ही है; तथापि टोडरमलजी के युग में विशेषकर जैनेतरों में इसप्रकार की प्रवृत्तियाँ बहुत थीं। यही कारण है कि पण्डितजी ने महाभारतादि के उदाहरण देकर इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

यद्यपि दिगम्बर जैनदर्शन में सम्यग्दर्शन–ज्ञानपूर्वक सकल संयमधारी नग्न दिगम्बर मुनिराजों को ही गुरु संज्ञा प्राप्त है; तथापि आज की स्थिति तो यह है कि कोई भी व्यक्ति; घर छोड़ा, चादर ओढी और अपने को गुरु मानने लगता है, मनवाने लगता है।

वैसे तो जैनदर्शन में ब्रह्मचर्य व्रत सातवीं प्रतिमा में होता है। सातवीं प्रतिमा का नाम भी ब्रह्मचर्य प्रतिमा है। उसके पहले ब्रह्मचर्याणुव्रत तो हो सकता है, पूर्ण ब्रह्मचर्य नहीं। अरे, भाई ! ब्रह्मचर्याणुव्रत भी मिथ्यात्व, अनन्तानुबंधी और अप्रत्याख्यानावरण कषाय के अभावपूर्वक होनेवाले सम्यग्दर्शन–ज्ञान व अणुव्रतरूप देशचारित्र पूर्वक होता है। न सम्यग्दर्शन का ठिकाना है, न सम्यग्ज्ञान का पता है, अणुव्रती भी नहीं है और ब्रह्मचारी हो गये और मानने लगे कि हम जगत से हट के हैं, कुछ विशेष हैं; इसलिए जगत के गुरु हैं।

अरे, भाई ! **पत्नी या पति का नहीं होना ही तो ब्रह्मचर्य नहीं है। ऐसा तो पाप के उदय में भी हो सकता है;** अधिकांशत: होता भी ऐसा ही है। तुलसीदासजी ने भी लिखा है ह्न

नारि मुई अर संपति नाशी। मूढ मुड़ाय भये सन्यासी।।

आज तो मूढ मुड़ाने की भी जरूरत नहीं है, लम्बे–लम्बे बाल रख लेने से भी काम चल जाता है।

उक्त संदर्भ में पण्डितजी कहते हैं कि अकेला अब्रह्म (कुशील) ही तो पाप नहीं है; हिंसा, झूठ, चोरी और परिग्रह भी तो पाप हैं; क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायें भी तो पाप हैं और मिथ्यात्व तो पाप के बाप का भी बाप है। जो इन सब पापों को छोड़े बिना ही अपने को महान मानने लगे तो उसके लिए क्या कहा जाय ?

सामान्य गृहस्थों में तो थोड़ी–बहुत सहनशीलता देखी भी जाती है; क्योंकि उन्हें अपने परिवार के साथ तो समायोजन करना ही पड़ता है; पर ये तो....। इनकी स्थिति तो यह है कि न सम्यग्दर्शन, न सम्यग्ज्ञान, न उन्हें प्राप्त करने की ललक; न तत्त्वज्ञान, न उसे प्राप्त करने के लिए अभ्यास ; न अध्ययन, न मनन, न चिन्तन, न खान–पान की मर्यादा; बस कोरे ब्रह्मचारी बन गये हैं और इसी के आधार पर स्वयं को गुरु मानकर पुजना चाहते हैं। यदि कोई उन्हें न पूजे, नमस्कारादि न करे तो फिर देखो इनका रंग, देखते ही बनता है।

पण्डितजी ने उस समय का जो चित्र खीचा है; आज की स्थिति तो उससे भी बदतर है।

सामान्यजनों के समान ही निरन्तर जगत प्रपंचों में उलझे रहना, कषायचक्र में जलते रहना, उबलते रहना, दंद–फंद करते रहना ह्न क्या यही काम रह गया इन ब्रह्मचारियों को, गृहत्यागियों को ? यह एक गंभीर प्रश्न है। **(क्रमश:)**

डायरेक्ट्री प्रकाशन हेतु अलवर शाखा का दौरा

अलवर (राज.) : अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष पण्डित अजितजी शास्त्री ने अलवर शाखा अध्यक्ष शशीभूषणजी जैन के साथ दिनांक 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक कोटा संभाग का दौरा किया।

31 अक्टूबर को कोटा में इन्द्रविहार स्थित दि.जैन मंदिर में प्रवचन के पश्चात् कोटा संभाग की कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई। पण्डित अजितजी शास्त्री ने बैठक के प्रारम्भ में संगठन को मजबूत व सक्रिय बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुये प्रदेश में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी। श्री शशीभूषण जैन ने प्रदेश के महत्वपूर्ण कार्यक्रम के रूप में प्रदेश स्तरीय सदस्य विवरणिका के प्रकाशन की आवश्यकता को बताते हुये सभी शाखाओं से विवरणिका हेतु आवश्यक सूचनायें निर्धारित प्रपत्र में भिजवाने का अनुरोध किया।

दिनांक 1 नवम्बर को प्रात: रामपुरा स्थित दि.जैन मंदिर में दिल्ली से पधारे पण्डित सुदीपजी शास्त्री एवं डॉ. मानमलजी के प्रवचन के पश्चात् कोटा शहर फैडरेशन की बैठक का आयोजन किया गया।

रविवार सायं पण्डित अजितजी शास्त्री व श्री शशीभूषणजी जैन ने भीलवाड़ा जिले के बिजौलिया में शाखा सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की। बैठक के पूर्व पण्डित अजितजी शास्त्री का समयसार ग्रन्थ के 185 वें कलश पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। सोमवार प्रात: अतिशय क्षेत्र बिजौलिया पार्श्वनाथ के दर्शन कर भीलवाड़ा फैडरेशन के अध्यक्ष सुकुमालजी चौधरी के साथ बैठक की गयी। **– शशीभूषण जैन (अध्यक्ष)**

बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

राजकोट (गुज.) : यहाँ दिनांक 20 से 25 अक्टूबर को पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट के निर्देशन में बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। विद्वानों में पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री गजपंथा का लाभ मिला; बालकों ने अपूर्व धर्मलाभ लिया।

17 नवम्बर 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

मुक्त विद्यापीठ के विद्यार्थी ध्यान दें !

श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ की सत्र 2009-10 के लिये प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है। जिन छात्रों ने विशारद प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष एवं सिद्धांत विशारद प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया है, उन सभी को प्रवेश संबंधी सूचनायें भेजी जा चुकी हैं।

चूँकि विद्यापीठ में इस वर्ष से सेमेस्टर सिस्टम से परीक्षायें होंगी; अत: विद्यार्थी उसी के अनुरूप तैयारी करें। प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आयोजित होगी। विद्यार्थियों की सुविधा हेतु प्रथम सेमेस्टर के कोर्स की पुन: सूचना दी जा रही है।

विशारद प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ)

प्रथम सेमेस्टर — वीतराग विज्ञान भाग-1
छहढाला + सत्य की खोज

विशारद द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ)

प्रथम सेमेस्टर — तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1
लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका

सिद्धांत विशारद प्रथम वर्ष (शास्त्री प्रथम वर्ष)

प्रथम सेमेस्टर — क्रमबद्धपर्याय + सामान्य श्रावकाचार

जो छात्र किसी कारण से विगत सत्रों में परीक्षा नहीं दे पाये हैं, वे इस वर्ष की परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। इसके लिये कोई फीस नहीं देनी होगी। ऐसे छात्र अपनी जानकारी अवश्य भेजें, ताकि उसी के अनुसार पेपर भेजे जा सकें।

आध्यात्मिक सुसंस्कार शिविर

कोल्हापुर (महा.) : यहाँ दि.जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा-कोल्हापुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 19 से 26 अक्टूबर 2009 तक श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक सुसंस्कार शिविर अनेक सफलताओं के साथ संपन्न हुआ।

शिविर का प्रारंभ कोल्हापुर के प्रसिद्ध व्यापारी श्री सुभाष भोजे द्वारा झण्डारोहण एवं श्री अरविन्द जैन द्वारा उद्घाटन के साथ हुआ। इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित जिनचन्दजी आलमान, पण्डित शीतल हेरवाड़े, डॉ.नेमिनाथ बालीकाई, विदुषी स्वयंप्रभा पाटील, कु.परिणति पाटील, कु.प्रतीति पाटील, पण्डित सुरेन्द्र पाटील, राजू सांगावे, भरत अलगोंडर, अनिल आलमान, अभिनंदन पाटील, दीपक अथणे, प्रसन्न शेटे, सनत खोत, संयम शेटे आदि अनेक विद्वानों के विभिन्न विषयों पर हुये प्रवचनों, व्याख्यानों एवं कक्षाओं का लाभ लगभग 500 श्रावक-श्राविकाओं को मिला।

शिविर की सफलता हेतु श्री कैलाशचंदजी जैन, गंगई सर, बालासाहेब वसवाडे आदि महानुभावों का विशेष योगदान रहा।

ज्ञातव्य है कि यहाँ शिविर के मध्य सकल जैन समाज ने डॉ. भारिल्ल का विशेष अभिनन्दन किया, जिसके समाचार विगत अंग में प्रकाशित हो चुके हैं। **– शांतिनाथ खोत**

शोक समाचार...

1. खड़ैरी : बुन्देलखंड धरा को लघु सोनगढ बनाने वाले पण्डित गोविन्ददासजी खड़ैरी (वर्तमान प्रवासी सोनगढ) का दिनांक 5 नवम्बर को प्रात:काल सोनगढ में निधन हो गया। आपने गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के तत्त्व को संपूर्ण बुन्देलखण्ड में प्रचारित किया था। मुमुक्षु समाज, खड़ैरी ग्राम को **गोविन्ददासजी की खड़ैरी** के नाम से जानती है। आपकी ही सद्प्रेरणा से खड़ैरी में 17 शास्त्री विद्वान हो गये हैं। आपने अपने मरणसमय को जानकर एक दिन पहले ही अन्न-जल का त्याग कर समाधि-मरणपूर्वक देहत्याग किया। आपके अमूल्य योगदान का मुमुक्षु समाज चिरऋणी रहेगा। **– चैतन्य शास्त्री (खड़ैरी)**

2. हिंगोली (महा.) निवासी श्री जयकुमारजी बापूजी परतवार का 84 वर्ष की आयु में अनंत चतुर्दशी के दिन दोपहर 1.30 बजे समाधिपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायप्रेमी एवं समाजसेवी थे। ज्ञातव्य है कि आप मा. श्री कमलचंदजी परतवार (न्यायाधीश-डेब्ट रिकवरी ट्रिब्यूनल, मुम्बई) एवं श्री संतोष परतवार (अध्यक्ष - अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा हिंगोली) के पिताजी थे।

3. कन्नड (औरंगाबाद) निवासी श्री सचिन पाटनी शास्त्री का दिनांक 9 अक्टूबर,09 को ब्रेन ट्यूमर के कारण आकस्मिक निधन हो गया। आप श्री टोडरमल महाविद्यालय के और श्री पार्श्वनाथ ब्र.आश्रम गुरुकुल एलोरा (औरंगाबाद) के विद्यार्थी थे। आप अत्यंत सरल परिणामी थे। अल्पायु में आपके निधन से महाविद्यालय परिवार में शोक की लहर दौड़ गयी है।

4. तलोद (गुजरात) निवासी श्री सोमचन्द भाईचन्द शाह का 88 वर्ष की आयु में दिनांक 17 सितम्बर को देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में लीलाबेन नगीनदास शाह द्वारा 250/- एवं श्री संजयभाई मनीषभाई शाह द्वारा 250/- रुपये साहित्य प्रकाशन हेतु प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127